प्रातः क्लास 28-2-68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों से रूह-रूहान कर रहे हैं। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान रूहों प्रित। रूह है ज्ञान का सागर। मनुष्य कब ज्ञान का सागर नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य है भक्ति का सागर। है तो सभी मनुष्य। जो ब्राहमण बनते हैं उनकी भक्ति छूट जाती है। वह फिर ज्ञान सागर से ज्ञान सागर बन रहे हैं। फिर देवताओं में न भक्ति न ज्ञान ही होता है। देवतायें यह ज्ञान नहीं जानते हैं। ज्ञान का सागर एक ही परमपिता परमात्मा है इसलिए उनको ही हीरे जैसा कहेंगे। कौड़ी से हीरे जैसा या पत्थर बुधि से पारस बुधि वही बनाते हैं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। देवतायें ही फिर आकर मनुष्य बने हैं। देवतायें बने हैं श्रीमत से आधा कल्प। वहां कोई की मत की दरकार नहीं रहती है। यह सभी है आसुरी मत। क्योंकि आसुरी राज्य है ना। यह भी उनको पता नहीं है। तुमको भी नहीं पता था। अभी बाप ने समझाया है। सद्गुरु की श्रीमत मिलती है। खालसे लोग भी कहते हैं सद्गुरु अकाल। इसका भी अर्थ नहीं समझते हैं। और ही अनर्थ कर देते हैं क्योंकि रावण बुधि हैं ना। पुकारते भी हैं सद्गुरु आकल मूर्त ... अर्थात सद्गति करने वाला अकाल मूर्त है। अकाल मूर्त परम पिता परमात्मा को ही कहा जाता है। सद्गुरु और गुरु में रात-दिन का फर्क है। वह ब्रह्मा का दिन कर देते वह रात कर देते। ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात। वे तो जरूर कहेंगे ब्रह्मा पुनर्जन्म लेते हैं। कल्प तो यह देवता(विष्णु) बन जाते हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। तुम शिव बाबा की महिमा लिखते हो उनका है हीरे जैसा जन्म बाकी सभी का है कौड़ी मिशल। इस पर भी बिगरते हैं देवताओं के लिए तुम ऐसे कहते हो। अरे देवतायें यहां बैठे थोड़े ही हैं। उनको तो यह पता ही नहीं है कि देवतायें 84 जन्म लेते2पतित बन पड़े हैं। पतित की महिमा कब हो नहीं सकती है। पावन बने, पुजारी से पूज्य बने तब ही महिमा लायक हो। आधा कल्प पूज्य फिर पुजारी बन जाते हैं। अभी इन पुजारियों को पूज्य कौन बनावे। जैसे शु शंकराचार्य शिव की पुजा करते हैं तो पुजारी ठहरा ना। उनको पूज्य कौन बनावे। पूजा तो सभी करते हैं। गंगा स्नान करना भी पूजा ठहरी ना। अनेक प्रकार की पूजा करते हैं। मनुष्य ऐसे तो पत्थर बुधि बन गये हैं जो समझते ही नहीं। पानी कैसे पावन बनावेंगे। जब कि पतित-पावन भगवान को ही कहा जाता है। सभी पुजारी हैं। खुद भी स्नान करते हैं औरों को भी करवाते हैं। झूठी महिमा होगई है ना। अभी उन्हीं का सामना करने वाला तो तुम्हारे सिवाय और कोई है नहीं। तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये पावन बनते हो। पवित्र बन फिर यह ज्ञान धारण करना है। कुमारियों को तो कोई बन्धन नहीं है। सिर्फ मां-बाप, बहिन-भाई की सम्प्रीत रहेगी। फिर ससुर घर में जाने से दो परिवारों की याद हो जाती है। अभी बाप तुमको कहते हैं अशरीरी बनो। अभी सभी को वापस जाना है। तुमको पवित्र बनने की युक्ति भी बताता हूं। पतित-पावन मैं हूं ना। मैं गैरन्टी करता हूं तुम मुझे याद करेंगे तो उस योगाग्नि से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। जैसे पुराना सोना आग में डालने से उन से खाद निकल जाती है बाकी सच्चा सोना रह जाता है। यह भी योग अग्नि है। अब इस संगम पर ही बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। इसलिए इनकी बहुत महिमा है। राजयोग जो भगवान ने सिखाया था वह सभी सीखने चाहते हैं। बिलायत से भी सन्यासी लोग पकड़ कर ले आते हैं। वह समझते हैं इन्हों ने सन्यास किया हुआ है। अभी सन्यासी तो तुम हो। परन्तु हद के सन्यासी और बेहद के सच्चे सन्यासी को जानते ही नहीं है। बेहद का सन्यास तो एक ही बाप सिखलाते हैं। तुम जानते हो पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। आखिर इस दुनिया के कोई भी चीज में रूचि नहीं लगती है। पुरानी ने शरीर छोड़ जाये दुसरा लिया पार्ट बजाने फिर हम रोवें क्यों। मोह की रग निकल जाती है। हमारा सम्बन्ध जूटा है अब नई दुनिया से। वह ऐसे बनके मस्तकलंगीधर होते हैं। तुम्हारे में राजाई पने की मस्ती है। बाबा में भी यह मस्ती है ना। हम यह मस्त कलंगीधर जाकर बनेंगे। फकीर से अमीर बनेंगे। अन्दर में यह मस्ती चढ़ी हुई है। इसलिए मस्त कलंगीधर कहते

हैं। इनकातो सा० भी करते हैं। तो जैसे कि इनकी मस्ती चढ़ी हुई है। तुमको भी चढ़नी चाहिए। तुम भी रुद्र माला में पिराने वाले हो। जिनकोपक्का निश्चय हो जाता है उनको नशा चढ़ेगा। हम आत्माओं को अब वापस जाना है घर। फिर नई दुनिया में आवेंगे। उसी निश्चय से इनको भी देखते हैं। तो उनको जैसे बच्चा देखने में आता है। कितना शोभनीक है। कृष्ण यहां है थोड़े ही। उनके पिछाड़ी कितना हैरान होते हैं। झूले बनाते उनको दूध पिलाते हैं। वह तो है आर्टीफीशियल जड़ चित्र। यह तो रोयल है ना। इनको भी यह पक्का निश्चय है हम बालक बनेंगे। तो बच्चों को भी बालक रूप देखने में आता है। वह भी दिव्य-दृष्टि में देखते हैं। इन आंखों से देख न सके। आत्मा को दिव्य दिव्य -दृष्टि मिलती है। शरीर का भान नहीं रहता। उस समय अपने को महाराजा और उनको बच्चा समझेंगे। यह सा० भी इस समय बहुतों को होता है। सफेद पोश-धारी को भी बहुतों को सा० होता है। फिर उनको कहते हैं तुम इनके पास जाओ ज्ञान लो तो ऐसा स्वर्ग का प्रिन्स बनेंगे। तो यह जादूगरी ठहरी ना। सौदा भी बहुत अच्छा करते हैं। कौड़ी देकर हीरे देते हैं। हीरे जैसा तुम बनते हो। शिव बाबा तुमको हीरे जैसा बनाते हैं। इसलिए बलिहारी उनकी है। मनुष्य न समझने कारण जादू2 कह रुड़ियां मारते रहते हैं। जो आश्चर्यवत भागन्ती हो जाते हैं वह जाकर उल्टा, सुल्टा सुनाते हैं। यहां यह2 होता है।.... वास्तव में यह सिर्फ बहलाने की बातें। इनमें और कुछ है नहीं। ऐसे बहुत ट्रैटर बन पड़ते हैं। ऐसे ट्रैटर बनने वाले ऊंच पद थोड़े ही पा सकते हैं। इसको कहा जाता है सद्गुरु के निन्दक ठौर न पाये। उन गुरुओं पास तो कोई रूमआबजेक्ट है नहीं। बहुत भाईयां जाकर दन्त कथा सुनती है। भाईयों को भी सीखाते हैं जो फिर कुछ मिलता है आपस में हिस्सा कर देते हैं। बहुत कापी करते हैं। और बहुत कापी करेंगे। तुम देखना कितनी ब्रह्मा कुमारियां बन जाती हैं। फायदा कुछ भी नहीं। शिव बाबा तो यहां है ना। कौड़ी बदलो हीरे देना यह तो बाप ही का काम है। बाकी सभी ठग लेते हैं। पैसा लेकर खा जाते हैं। और हो तमोप्रधान बन जाते हैं। यहां तो सत्य बाप है ना। यह भी अभी तुम समझते हो। मनुष्य तो कह देते हैं वह तो युगे2 आते हैं। अच्छा वह भी 4-5 युग है। फिर 24 अवतार, 64 अवतार कैसे कहते हो। फिर कह देते ठिकस-भितर कणा2 में है परमात्मा है। तो सभी अवतार हो गये। मनुष्य तमोप्रधान बन जाते हैं तो उल्टी ही बातें सुनाते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप कहते हैं मैं कौड़ी से हीरे जैसा बनाने वाला, मुझे फिर ठिकस-भितर में, कणा2 में, कह देते हैं। खुद अपने लिए 84 जन्म कहते हैं। मुझे फिर अनाबिन्द-गिनती में डाल दिया है। भारतवासी ही तमोप्रधान बनने कारण ठिकस-भितर में कह देते हैं। सर्वव्यापी है तो गोया कि आपस आद सब में आ जाते हैं। फिर तो कोई वैल्यु ही नहीं रही। मेरे ऊपर कितना उपकार करते हैं। इसलिए उन्हों को जंगली कांटा, पत्थरबुधि, असुर यह सब बाप ने नाम रखे हैं। जब ऐसे बन जाते हैं तो फिर बाप आकर यह बनाते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी जरूर रिपीट होगी। तद्युग फिर यह ल०ना० ही आवेंगे। वहां सिर्फ भारत ही होता है। शुरू2 में बहुत थोड़े देवतायें होते हैं। फिर वृधि को पाते 5000 वर्ष में कितने हो गये हैं। अभी यह ज्ञान और कोई की बुधि में नहीं है। बाकी है भक्ति। देवताओं के चित्रों की महिमा गाते हैं। यह नहीं समझते हैं कि चैतन्य में थे। फिर कहां गये। चित्रों की पूजा तो करते हैं। परन्तु वह है कहां। उनको भी तमोप्रधान फिर सतोप्रधान बनना है। ऐसे तमोप्रधान बुधि को सतोप्रधान बनाना बाप का ही काम है। यह ल०ना० पास्ट हो गये हैं इसलिए उनकी महिमा गाते हैं। ऊंच ते ऊंच एक भगवान ही है। बाकी तो सभी पुनर्जन्म लेते ही रहते हैं। बाप ही सब को मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। वह न आते तो वर्ल्ड आटोमेटिक अपनी तमोप्रधान बन पड़ते। यह जब राज्य करते थे तो वर्ल्ड फाउन्ड थे। वहां कोई पूजा आद नहीं करते थे। वह फिर पुजारी बन गये हैं जो सम्पूर्ण निर्विकारी थे वही सम्पूर्ण विकारी बन गये हैं। आत्मा ही पतित बनती है। यह बातें तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार ही आ जानते हैं। खुद ही पूरा समझा न होगा तो औरों को क्या समझावेंगे। नाम होगा ब्रह्मा

कुमारियां समझा न सकी। नुकसान कर देते हैं। इसलिए ही बाप कहते हैं जो समझते हैं हम नहीं समझा सकते हैं तो बोलना न चाहिए। हम अपनी बहिन को कहते हैं वह आप को आकर समझावेंगी। भारत हीरे जैसा था अभी कौड़ी मिशल है। बेगर भारत कौफिर सिरताज कौन बनावेंगे। ल०ना० अभी कहां हैं वह तो हिसाब बताओ। बता न सकेंगे। वह हैं हो भक्ति के सागर। वही नशा चढ़ा हुआ है। तुम हो ज्ञान के सागर। वह शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं शास्त्रों में है भक्ति के रसम रिवाज़। (खांसी हुई) यह भी निशानी है ना अजन कर्मभोग है। अजन पुरुषार्थ करना है। जितना यह जोर पड़ता जावेगा उतनी कोशिश होगी। यह चकचक हो जायेगा तो फिर सभी को ही कशिश होगी। अभी नहीं है। फिर ऐसा योग तथा शक्ति। जितना बाप को याद करते हैं ऐसे भी नहीं कि सदैव याद ही करते हैं। फिर तो यह शरीर भी न रहे। अभी तो अजन बहनों को पैगाम देना है। पैगम्बर बनना है। तुम बाप के बच्चे पैगम्बर बनते हो। और कोई नहीं बनते। क्राईस्ट आद यह तो सिर्फ आकर धर्म स्थापन करते हैं। उनको पैगम्बर मैसेन्जर नहीं कहा जाता। क्रिश्चन धर्म स्थापन किया। वह फिर के शरीर में आया। फिर उसके पिछाड़ी दूसरे आते गये। यहां तो यह राजधानी स्थापन हो रही है। आगे चल तुमको सब सा० होंगे क्वाइ बनेंगे। यह भी हम ने विकर्म किया है। सा० होने में कोई देरी नहीं लगती है। काशी कलट खाते हैं ना। एकदम खड़ा कोकाह कुएं में कुद पड़ते हैं। अभी गवर्नमेन्ट ने बन्द कर दी है। वह समझते हैं मुक्ति को पावेंगे। बाप कहते हैं मुक्ति तो कोई पा न सके। थोड़े ही समय में जैसे सभी जन्मों का डन्ड मिल जाता है। फिर नये सिरे हिसाब शुरू होता है। वापस तो कोई भी जा न सके। कहां जाकर रहेंगे। सिजरा ही बिगर जाये। नम्बरवार आवेंगे फिर नम्बर जावेंगे। बच्चों को सा० होती है तब तो चित्र आद बनाते हैं। 84 जन्मों की, सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान तो तुमको मिलता है। फिर तुम्हारे में नम्बरवार तो हैं ही। कोई बहुत मार्क्स से पास होते हैं कोई कम। 100 मार्क्स तो होती ही नहीं है। 100 है ही बाप की। ऐसा तो कोई नम्बर वन न सके। आत्मा सभी कितनी छोटी बिन्दी है। मनुष्य कितने बड़े हैं। एक न मिले दूसरे से। जितनी आत्मायें हैं उतनी ही फिर होंगी। तब तो वहां घर में रहेंगे। यह भी ड्रामा बना हुआ है। इसमें कुछ भी फर्क नहीं हो सकता। एक बार जो शूटिंग हुई वही फिर देखेंगे। अभी बाबा बैठे हैं तो सम्मुख एक्सप्रेशन देखते हो फिर भी 5000 बाद ऐसे ही देखेंगे। तुम कहेंगे 5000 वर्ष पहले भी ऐसे मिले थे। एक सेकण्ड भी कम ज्यादती नहीं हो सकता। ड्रामा है ना। जिसको यह रचता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है उनको कहा जाता है सुदर्शन चक्रधारी। बाप से ही यह नालेज मिलती है। मनुष्य मनुष्य को ज्ञान दे न सके। भक्ति सिखला न सके। ज्ञान का सागर तो एक ही है। फिर ज्ञान नदियां तुम बनते हो। ज्ञान सागर और ज्ञान की नदियों से मुक्ति जीवनमुक्ति मिलती है। वह तो है पानी की। पानी तो सदैव है ही। ज्ञान मिलता है संगम पर। पानी की नदियां तो भारत में है ही। बाकी तो इतने सब शहर ही खत्म हो जाते हैं। खण्ड ही नहीं रहता। बरसात तो पड़ती होगी ना। पानी पानी में जाकर पड़ेगा। वहां भारत होगा। अभी तुमको नालेज मिलती है। भक्ति से दुर्गति ज्ञान से सदगति होती है। 84 जन्म लेते2 दुर्गति हो गई है। अभी फिर कौन करे। हीरे जैसा एक ही शिव बाबा है। जिसकी जयन्ति मनाई जाती है। पूछना चाहिए शिव बाबा ने क्या किया। वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। मनुष्य तो नेती2 कह देते हैं। अभी तुम जानते हो यह सब भूलें हैं। रचता बाप को नहीं जानते। तुम कहेंगे हम जानते हैं। भाई है अंधियारा। तब ही गाया जाता है ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात। आने 84 जन्मों की कहानी को तो मालूम हो ना चाहिए ना। तुम समझते हो हमारे 84 जन्म पूरी हुई हैं। अभी बाप को याद करने पावन बन जावेंगे। वहां शरीर भी पावन मिलेगा। तुम ही नम्बरवन पावन नम्बरवन पतित बनते हो। मुख्य बात है ही याद की। कई को याद करते हो नहीं आता। आत्मा को आत्मा समझ बाप को कैसे याद करें। फिर बच्चे है तो स्वर्ग में आवेंगे। इस समय के पुरुषार्थ से ही राजाई मिलती है। अच्छा मीठे2 बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुडमोर्निंग।